संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-1

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

दक्षिण भारत में कृष्णा नदी के आस-पास के क्षेत्र में व्यापारियों, जैन, बौद्ध और ब्राह्मण धर्म प्रचारकों और विजेता लोगों के बसने से एक नवीन भौतिक संस्कृति का उदय हुआ, जिसे संगम संस्कृति कहते है| इसमें तीन राज्यों चोल, चेर व पाण्ड्य का उल्लेख मिलता है| इसके बारे में जानकारी पुरातात्विक वस्तुएं एवं साहित्यिक ग्रंथो से होती है| इस लेख में संगम काल के राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज और धर्म के बारे में चर्चा किया जाना प्रांसगिक होगा|

अध्ययन का स्त्रोत

संगम काल का अध्ययन पुरातात्विक और साहित्यिक स्त्रोतों के आधार पर किया जाता है| पुरात्वातिक स्त्रोत के अंतर्गत सम्राट अशोक के अभिलेख, आगस्टस का मंदिर, खारवेल का हाथी गुफा अभिलेख, आगस्टस तथा टिवेरियस के मुहर वाले सिक्के और नीरो के सोने एवं चांदी के सिक्के प्रमुख है| ये सिक्के तमिल प्रदेश में अनेक स्थान से प्राप्त हुए है| इसके अलावे कच्छयुक्त एवं कच्छविहीन कब्र भी महत्वपूर्ण पुरात्वातिक स्त्रोत है| साहित्यिक स्त्रोत के अंतर्गत संगम साहित्य के साथ ही विदेशी साहित्य भी इस काल के बारे में जानकारी प्रदान करते है|

साहित्यिक स्त्रोत में संगम साहित्य इस काल के बारे में जानकारी देने वाला महत्वपूर्ण स्त्रोत है| दक्षिण भारत में इससे पहले कोई भारतीय लिखित स्त्रोत प्राप्त नहीं होता है| संगम का अर्थ था तमिल कवियों का सम्मलेन और इस सम्मलेन में कवियों के द्वारा साहित्य का संकलन किया जाता था| इसी के नाम पर पूरे काल को संगम काल कहा गया| इस सम्मलेन को शासको द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था| संगम साहित्य का संकलन 300 ई. से 600 ई. के बीच किया गया परन्तु इसमें से कुछ 200 BC के भी दिखाई देते है|

विदेशी स्त्रोतों के द्वारा भी संगम काल के बारे में जानकारी मिलती है| मेगास्थनिज ने सर्वप्रथम दक्षिण राज्यों का उल्लेख किया है| उसने पांड्य राज्य को मोतियों के लिए मशहूर बताया है| पेरिप्लेस ऑफ दि एरिथ्रियन सी कृति में भी संगम काल के बारे में जानकारी मिलती है| प्लिनी एवं स्ट्रेबो के वर्णन से भी संगम काल के बारे में जानकारी मिलती है|